



AHSANUL QAWAID



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

رَبِّ الْعَالَمِينَ لَا تَعْلَمُ رَبَّكَ إِلَّا بِالْحِكْمَةِ
رَبِّ الْجَمْدِ فِي عَلَمِنَا

| | | | | |
|----------|----------|----------|----------|----------|
| ج | ث | ت | ب | أ |
| Jeem | Tha | Taa | Baa | Alif |
| ر | ذ | د | خ | ح |
| Raa | Thaal | Daal | Kha | Ha |
| ض | ص | ش | س | ش |
| Dhaad | Saad | Sheen | Seen | Zaa |
| ف | غ | ع | ظ | ط |
| Faa | Ghayn | Ayn | Za | Ta |
| ن | م | ل | ك | ق |
| Noon | Meem | Laam | Kaaf | Qaaf |
| ي | ي | ء | ه | و |
| Yaa | Yaa | Hamza | Haa | Waaw |

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

رَبِّ يَعْزِيزُهُ لَا تَعْسِرُهُ وَتَهْدِيهُ بِالْخَيْرِ وَبِإِذْنِ شَيْعَتِنَا
رَبِّ الْجَمْدِ فِي عَلَمَنَا

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ج | ث | ت | ب | ا |
| س | ذ | د | خ | ح |
| ض | ش | ص | س | ن |
| ف | ع | ظ | ط | |
| م | ه | ل | ك | ق |
| ي | ء | ي | ه | و |

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

رَبِّ يَسِّرْ لِي تَعْصِيرَ وَتَقْبِيمَ بِالخَيْرِ وَلَا تَسْعِينِي يَاقْعَدَ
رَبِّي مَنْذُ فِي أَعْلَمَةٍ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ج | ب | ث | ت | ح |
| ص | ض | ز | ذ | ط |
| ع | ظ | خ | ض | ق |
| ل | ش | ه | ذ | ع |
| ي | ف | ن | و | م |
| س | د | ك | ك | ع |

مشق Exercise

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ه | س | ح | ط | ء | د | ا |
| ذ | ف | ج | ظ | ك | ص | ع |
| ش | ي | خ | ق | ز | ض | غ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ج | س | ب | ء | ك | ز | ت |
| ف | ش | ط | ض | خ | د | ظ |
| و | ر | ق | ح | م | ي | ه |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ح | ض | ر | ج | ل | ق | ع | ث |
| خ | ب | ذ | ك | ف | ي | ه | ت |
| | ن | ش | ظ | ذ | ص | م | غ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ص | ب | ح | ف | ز | ت | ض | ع |
| ش | ث | ق | ي | خ | ج | ظ | |

سیق ۲ Lesson 2

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ب | ب | ج | ج | ش | ش | ت | ت | خ | خ |
| د | د | ز | ز | ذ | ذ | ذ | ذ | ص | ص |
| ض | ض | ع | ع | غ | غ | ع | ع | ك | ك |
| ل | ل | م | م | ن | ن | م | م | ي | ي |

مشتق Exercise

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| غ | ر | ب | ص | خ | ف | ث | ح |
| ذ | د | ق | ج | ع | ت | ض | ي |
| ج | ي | ل | ع | ث | ص | ك | غ |
| ش | ذ | ر | ف | ن | ه | ق | ض |

NOTE : IN LESSON 2 EXPLAIN IN DETAIL THE SHAPES & FORMS OF THE LETTERS.

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ب | س | ت | ر | ت | م | ج | ل | ح | ج | خ | ط | س | د | ش |
| ع | ذ | ص | ب | ا | ض | د | غ | م | ف | ذ | ق | ل | ك | ن |
| ذ | ك | ه | ل | ئ | ذ | ي | ر | ث | ج | ن | ت | ث | ب | ز |

سبق ۳ Lesson 3

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ف | غ | ع | ت | ب | ا |
| ف | غ | ع | ت | ب | ا |
| ي | ه | م | ل | ك | ق |
| ي | ه | م | ل | ك | ق |

مشق Exercise

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ز | ب | ث | ة | ع | ة | ف | ـ | غ | ـ | ق |
| ي | ت | ل | ا | ك | ل | م | ـ | ع | ـ | غ |
| ن | ب | ج | ـ | ي | ـ | ـ | ـ | ـ | ـ | ـ |

NOTE : IN LESSON 3 EXPLAIN IN DETAIL THE SHAPES & FORMS OF THE LETTERS.

JOINING UP LETTERS

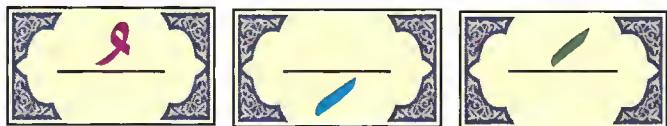
4

| END | MIDDLE | BEGINNING |
|-----|--------|-----------|
| ا | ا | ا |
| ب | ب | ب |
| ت | ت | ت |
| ة | ت | ت |
| ث | ث | ث |
| ج | ج | ج |
| ح | ح | ح |
| خ | خ | خ |
| د | د | د |

| END | MIDDLE | BEGINNING |
|-----|--------|-----------|
| ذ | ذ | ذ |
| ر | ر | ر |
| ز | ز | ز |
| س | س | س |
| ش | ش | ش |
| ص | ص | ص |
| ض | ض | ض |
| ط | ط | ط |
| ظ | ظ | ظ |
| ع | ع | ع |

| END | MIDDLE | BEGINNING |
|-----|--------|-----------|
| غ | خ | غ |
| ف | ف | ف |
| ق | ق | ق |
| ك | ك | ك |
| ل | ل | ل |
| م | م | م |
| ن | ن | ن |
| و | و | و |
| ه | ه | ه |
| ي | ي | ي |

سینق ۴ Lesson 4



| | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|
| أَ | بَ | تَ | ثَ | جَ | خَ | دَ |
| ذَ | رَ | زَ | سَ | شَ | صَ | ضَ |
| ظَ | عَ | غَ | فَ | قَ | لَ | مَ |



مشق Exercise

| | | | |
|--------|--------|--------|--------|
| أَمَرَ | بَلَغَ | ثَمَرَ | جَمَعَ |
| حَسَدَ | ذَكَرَ | رَفَعَ | زَعَمَ |
| سَرَقَ | صَدَقَ | ضَرَبَ | ظَلَمَ |
| عَدَلَ | قَمَرَ | كَسَبَ | وَجَدَ |

سیقہ Lesson 5

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ا | ب | ت | خ | د |
| ذ | ز | س | ص | ض |
| ظ | ع | ف | ق | ک |
| ن | و | ه | ء | ي |

مشق Exercise

| | | | |
|--------|--------|--------|--------|
| آذن | بَقِيَ | حَمَدَ | خَشِيَ |
| سَخَرَ | شَرِبَ | عَجَبَ | غَضَبَ |

| | | | |
|--------|--------|--------|----------|
| کَذَبَ | پَخْلَ | فَرَمَ | یَرْئَسَ |
| آبَتَ | بَلَدَ | مَلَكَ | حَطَبَ |
| ابَلَ | کَبَرَ | عَرَمَ | اسَّامَ |

سیق ۶ Lesson 6

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ا | ب | ت | ث | ج | ح | خ | د |
| ذ | ر | ز | س | ش | ص | ض | ط |
| ظ | ع | غ | ف | ق | ل | ک | م |
| ن | و | ه | ء | ي | | | |

مشق Exercise

| | | | |
|---------|------------|----------|----------|
| جُعل | خُلق | ذَكَر | سُعْل |
| ظِلم | مُنْعَلِعٌ | هُدَى | |
| وَجْد | سُقطَة | عَفْيَة | حُشْرَة |
| حُبْك | صَحْفَة | أُذْنَان | رُبْع |
| أَعْظَم | تَذْرِّي | يَرْتَدُ | يَحْدُدُ |

| | | | | | |
|------|------|------|------|-----------|------|
| هُوَ | لَكَ | هِيَ | بِكَ | ثَرَّلَمَ | مَعَ |
|------|------|------|------|-----------|------|

| | | | | |
|--------|--------|--------|--------|--------|
| خَلْقَ | وَقَبَ | حَسَدَ | كَسَبَ | قَدَرَ |
|--------|--------|--------|--------|--------|

| | | | | |
|--------|--------|--------|--------|--------|
| وَهَبَ | صَدَقَ | شَرَحَ | فَرَضَ | وَلَدَ |
|--------|--------|--------|--------|--------|

| | | | | |
|--------|--------|--------|--------|--------|
| فَدَرَ | هُدِيَ | نُفَخَ | خَلْقَ | غُفَدَ |
|--------|--------|--------|--------|--------|

| | | | | |
|-------|--------|--------|--------|-------|
| ضُربَ | وَعِدَ | كُتُبَ | يَضَعُ | قُضَى |
|-------|--------|--------|--------|-------|

| | | | | |
|--------|--------|--------|--------|--------|
| رَضِيَ | سَمِعَ | نَسِيَ | بَخَلَ | غَشِيَ |
|--------|--------|--------|--------|--------|

| | | | | |
|--------|--------|--------|--------|--------|
| لَبَثَ | وَلِيَ | لَقِيَ | يَدِيَ | شَبَعَ |
|--------|--------|--------|--------|--------|

| | | | | |
|--------|--------|--------|--------|--------|
| لَهُوَ | أَخَرَ | عُقْدَ | أَفْقَ | رُسُلُ |
|--------|--------|--------|--------|--------|

| | | | |
|----------|----------|----------|----------|
| وَجَدَكَ | عَدَلَكَ | خَلَقَكَ | بِيَدِكَ |
|----------|----------|----------|----------|

سیق ۷ Lesson 7



| | | | | | |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| بَا | تَا | جَا | حَا | خَا | دَا |
| ذَا | زَا | سَا | شَا | صَا | ضَا |
| ظَا | عَا | فَا | قَا | كَا | لَا |
| نَا | وَا | هَا | ئَا | يَا | |

مشق Exercise

| | | | | |
|----------|----------|----------|----------|---------|
| أَبَدَا | رَغْدَا | مَلِكَا | جَنْفَا | طَبْقَا |
| مَثَلَا | عَنْبَا | شَمَنَا | قَصَصَا | لَعْبَا |
| أَسْفَا | قَدْرَا | لَبَنَا | كَذْبَا | شَطَطَا |
| كُفْوَا | لُبَدَا | رُسْلَا | هُرْزَا | سُرْرَا |
| عَلَقَةٌ | بَقَرَةٌ | نَخْرَةٌ | حَسَنَةٌ | |

سیق ۸ Lesson 8

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ا | ب | ت | خ | د |
| ذ | ز | س | ش | ص |
| ظ | ع | ف | ق | ك |
| ن | و | ه | ء | ي |

مشق Exercise

| | | | | |
|-------|-------|-------|-------|--------|
| عَمَد | طَبَق | كَبَد | عَلْق | مَسَدٍ |
| لَهَب | سَنَة | نَهَر | شَجَر | غَضَبٌ |

| | | | | |
|----------|---------|----------|---------|---------|
| سَحَرٌ | كَذِبٌ | خَبَرٌ | فُرْشٌ | بِدَامٌ |
| حَرَّاجٌ | أَكْلٌ | سَفَرَةٌ | بَرَّةٌ | رَقَبةٌ |
| شَمَرَةٌ | هُمَزةٌ | لَمَزةٌ | هُمَزةٌ | لَمَزةٌ |

سبق ٩ Lesson 9

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| د | خ | ج | ح | ث | ت | ب | ا |
| ط | ض | ص | س | ز | ذ | ع | ظ |
| م | ل | ك | ف | ع | غ | ع | ظ |
|  | ي | ه | ف | ك | ل | م |  |
| ن | ه | ع | غ | ك | ل | م | ذ |
|  | ي | ه | ف | ك | ل | م |  |

مشق Exercise

| | | | | |
|---|----------|----------|----------|---|
| سُرُورٌ | أَذْنٌ | كَتْبٌ | رَسُولٌ | رَجُلٌ |
| جُدَادٌ | أَحَدٌ | قَسَمٌ | بَشَرٌ | سِنَةٌ |
| مَرْضٌ | حَرَجٌ | لَعْبٌ | حُرْمَهٌ | وَلَدٌ |
|  | شَجَرَةٌ | قَثَرَةٌ | غَبَرَةٌ |  |

سبق ١٠ Lesson 10

| | | | | | | | | | |
|---|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|---|---|
| بَا | تَا | ثَا | جَا | حَا | خَا | دَا | ذَا | رَا | ذَا |
| سَا | شَا | صَا | ضَا | طَا | ظَا | عَا | غَا | فَا | قَا |
| كَا | لَا | مَا | نَا | وَا | هَا | ئَا | يَا |  |  |
|  | يَا | ئَا | هَا | وَا | نَا | مَا | لَا | كَا | سَا |

مشق Exercise

| | | | | | |
|-------|--------|-------|---------|-------|----------|
| ذَاتُ | خَافَ | كَانَ | قَالَ | رَانَ | تَابَ |
| عَادٌ | نَارًا | هَادِ | مَالِكَ | عَامِ | ثَوَابًا |

| | | | | |
|---------|---------|---------|---------|-----------|
| أَفَاقَ | يَخَافُ | أَصَابَ | جَنَاحٌ | كَوَاعِبَ |
|---------|---------|---------|---------|-----------|

| | | | | |
|---------|----------|---------|---------|---------|
| جَاعِلٌ | خَالِدًا | شَبَاتٍ | كَاتِبٍ | غَاسِقٌ |
|---------|----------|---------|---------|---------|

| | | | | |
|---------|---------|---------|---------|----------|
| عَابِدٌ | دَافِقٌ | حَافِظٌ | مَطَاعٌ | صَوَابَا |
|---------|---------|---------|---------|----------|

| | | | |
|-------------|-------------|-------------|-------------|
| فَوَاكِهَةَ | رَوَاسِيَةَ | مَوَاحِدَةَ | أَنَامِلَةَ |
|-------------|-------------|-------------|-------------|

سبق ॥ Lesson 11

| | | |
|---|---|---|
| ، | ، | ، |
|---|---|---|

| | | | | | | |
|----|------|----------|--------|--------|-------|----|
| أَ | أَبَ | بَتَ | شَجَّ | جَحَّ | خَحَّ | خَ |
| ذَ | سَ | شَضَضَضَ | ظَعَفَ | قَلَمَ | وَيَ | |

مشق Exercise

| | | | | | | |
|----------|----------|----------|----------|------------|---------|--------|
| اَلْ | اَدَمَ | اَمَنَ | ذِلْكَ | اَشَرَ | اَخَرَ | |
| سَلَمٌ | حَلَّا | مَا | بَا | كِتَبٌ | مِهْدًا | إِلَهٌ |
| اَيْتٌ | اَشَرٌ | خُلْتِكَ | رِسْلِتٌ | اَكْلَمْتٌ | | |
| قُنْتَتٌ | حَفِظْتٌ | سَمْوَتٌ | كِشْفْتٌ | | | |

سبق Lesson 12

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ا | ہ | ی | پ | ڻ | ڻ |
| و | غ | ؤ | ڻ | ڻ | و |

مشق Exercise

| | | | | | |
|--------|--------|----------|----------|-------------|--|
| الْفِ | هُذِهِ | اَيْتِهِ | بِيَدِهِ | صَاحِبِتِهِ | |
| يَرَهُ | وَرِيَ | كِتَبَهُ | غَادَنَ | دَافَدَ | |

سیق ۱۳

Lesson 13

و

ه

| | | | | | |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| أو | بُو | تُو | جُو | خُو | دُو |
| ذُو | رُو | شُو | صُو | ضُو | طُو |
| ظُو | عُو | فُو | كُو | لُو | مُو |
| نُو | وُو | هُو | ءُو | يُو | |

مشق Exercise

| | | | |
|---------|----------|--------|--------|
| أَهْنَ | تَوْبَةٌ | حَوْفٌ | رَوْحٌ |
| شَوْجَا | سَوْفٌ | غُورًا | فُوتٌ |

| | | | | |
|----------|-------------|------------|------------|-----------|
| كُوْثَرَ | لَوْمَةٌ | مَوْتَقًا | نَوْمٌ | هُونَ |
| يَوْمَ | يَرْوَنَهَا | يَوْمَئِذٍ | أَوْتَادًا | عَفْوَنَا |
| سَوْطَ | قَوْلٌ | لَوْحٌ | صَوْمَا | |

سُبْقٌ ۯ۱۴ Lesson 14

| | | | | | | | |
|---|-----|-----|-----|-----|-----|-----|---|
| أُو | بُو | تُو | ثُو | جُو | حُو | خُو | دُو |
| ذُو | رُو | سُو | شُو | صُو | ضُو | طُو | |
| ظُو | عُو | غُو | فُو | قُو | كُو | لُو | مُو |
|  | | | | | | |  |
| نُو | وُو | هُو | ءُو | يُو | | | |

مشق Exercise

| | | | | |
|--------------|-----------|----------|------------|-----------|
| أُونِيَّة | بُورَكَ | ثُورُونَ | وُجُوهَة | حُورَ |
| دُولَة | لَذُو | ثُرَّا | يَسُومُونَ | صُورَ |
| وَطُورِ | أَعُوذُ | تَفُوسِ | يَقُولُونَ | تَكُونُ |
| مَوْقُوفُونَ | سَاهُونَ | نُوحَ | صَابِيونَ | أَنْجَونَ |
| يُوفُونَ | شَبُورَّا | قَعُودَ | شَهُودَ | أَنْجَونَ |

سیق ۱۵ Lesson 15

| | | | | |
|-------|------|------|------|------|
| اَيُّ | بِيْ | تِيْ | نِيْ | دِيْ |
| ذَيْ | رَيْ | زَيْ | سَيْ | ضَيْ |
| عَيْ | غَيْ | فَيْ | قَيْ | كَيْ |
| نِيْ | وَيْ | هِيْ | يِيْ | يِيْ |

مشق Exercise

| | | | | | |
|--------------|-------------|-------------|-----------|----------|-----------|
| اَيْنَ | بَيْتٍ | اَنْتَيْنَا | حَيْثُ | خَيْرٌ | بَدَائِنٌ |
| قَرْبَشٌ | زَيْتُونٌ | شَيْءٌ | صَيْفٌ | ضَيْفٌ | |
| طَيْرًا | عَيْنٌ | غَيْرٌ | كَيْدًا | يَلَيْتٌ | مَيْتًا |
| وَيْلٌ | بَنْتَيْنَا | ضَيْقٌ | رَيْبٌ | لَيْسَ | |
| هَدَيْنَاهَا | بَيْنَهُمَا | عَيْنَيْنِ | هَيْبَاتٍ | | |

سیق ۱۶ Lesson 16

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ا | ي | ب | ي | ن | ي | د | ي |
| ذ | ي | ر | ي | ز | ي | س | ي |
| ظ | ي | ع | ي | غ | ي | ف | ي |
| م | ي | ك | ي | ق | ي | س | ي |
| | | ء | ي | ه | ي | و | ي |
| | | | | | | ن | |

مشق Exercise

| | | | | |
|--------|-------|-------|-------|-------|
| ایتوںی | مُبین | یتیما | کشیرا | امجید |
| محیط | اخیہ | نذیر | کریم | تجزی |
| یسیرا | یمشی | بصیرا | لطیف | عظیم |
| میقاتا | بنیاء | اوی | شهید | لبثین |
| | | | | |

سُقْعَةٌ Lesson 17

| | | | | | | | |
|--------|----------|----------|------|-------------|------|--------|--------|
| أَنْ | إِذْ | أَمْ | إِنْ | بَلْ | تُبْ | خَذْ | دَعْ |
| ذَقْ | ذَرْنِيْ | نَرْدِيْ | سَلْ | فَصَوْ | عَنْ | عِدْ | |
| وَعْظَ | قَدْ | قُلْ | كَمْ | كَمْ لَكُمْ | كُنْ | كُلْ | |
| لَمْ | لَنْ | مَنْ | مِنْ | هَبْ | لِيْ | فَهَلْ | لَهُمْ |

مشق Exercise

| | | | | |
|-----------|------------|-----------|--------------|----------|
| ادْفَعْ | إِذْهَبْ | أَنْزَلْ | أَمْهَلْ | الْقَتْ |
| أَتْسِمْ | أَمْسِكْ | أَصْبِرْ | أَرْكَضْ | أَحْسَنْ |
| يَغْفِرْ | نَسْمَعْ | زِلْتَمْ | قَلْتَمْ | |
| يُعَظِّمْ | أَقْتَلْ | | يَدْخُلُكُمْ | |
| نَقْصَصْ | لَكْنَتَمْ | طِبَّتَمْ | | |

قُوْمٰيْ أَيْدِيْ رُوْحٰيْ دِيْنٰيْ كَيْدِيْ ضِيفِيْ

تَدْعُو بَعْفُو نَبْلُوكُمْ يَرْجُو تَنْتَلُو

أَنْتَ لَسْتَ بَعْدٌ بَطْشَ بَعْدٌ خَنْ

أَخْرَجَ أَرْسَلَ نَعْبُدُ الْهَمَ رَفَعَنَا

يَحْسَبُ فَرَغْتَ يُوسُوسُ أَغْطَشَ

الْحَمْدُ أَنْعَمْتَ أَعْطَيْنَكَ أَنْزَلْنَاهُ

يَشَهَدُ تَرْهَقُ تَعْرِفُ أَقْسِمُ بِشَرَبٍ

نُصِيبُتُ سُطْحَتُ آثْرَنَ وَسْطَنَ بِاذْنِ

سَيْعَلَمُونَ يَنْظُرُونَ يَسْتَوْفُونَ

| | | | | |
|--------|--------|--------|--------|--------|
| أَجْرٌ | حَبْلٌ | فَصْلٌ | عَدْنٌ | خُسْرٌ |
|--------|--------|--------|--------|--------|

| | | | |
|------------|------------|------------|-----------|
| مَسْعَبَةٌ | مَتَرْبَةٌ | مَقْرَبَةٌ | تَضَلِيلٌ |
|------------|------------|------------|-----------|

| | | | |
|--------|-----------|-----------|-------------|
| صَدْقٌ | تَقْوِيمٌ | تَكْذِيبٌ | مَرْفُوعَةٌ |
|--------|-----------|-----------|-------------|

| | | | | |
|-----------|-----------|---------|---------|---------|
| مَشْهُودٌ | مَجْنُونٌ | قَدْحًا | صَبْحًا | نَفْعًا |
|-----------|-----------|---------|---------|---------|

| | | | | |
|-----------|------------|------------|------------|------------|
| الْبَابَا | أَشْتَانَا | أَعْنَابَا | أَنْزَابَا | أَنْوَاجَا |
|-----------|------------|------------|------------|------------|

سبق ١٨ Lesson 18

| | | | | |
|-------|-------|--------|---------|---------|
| عَلَى | إِلَى | أُوْيٌ | فَهَذِي | أَغْنِي |
|-------|-------|--------|---------|---------|

| | | | |
|----------|---------|-----------------|-----------------|
| يَحِيٰيٌ | تَرْضِي | مِائَةٌ وَأَنَا | مِنَ الْأَوْلَى |
|----------|---------|-----------------|-----------------|

| | | | |
|--------|-----------|------------------|-------------|
| رَضُوا | أَمْنَوْا | مَا الْقَارِعَةُ | بِالْغَيْبِ |
|--------|-----------|------------------|-------------|

NOTE : IN LESSON 18 EXPLAIN THE LETTERS THAT SHOULD NOT BE READ/ PRONOUNCED.

| | | | | |
|--------|--------|--------|--------|--------|
| أَجْرٌ | حَبْلٌ | فَصْلٌ | عَدْنٌ | خُسْرٌ |
|--------|--------|--------|--------|--------|

| | | | |
|------------|------------|------------|-----------|
| مَسْعَبَةٌ | مَتَرْبَةٌ | مَقْرَبَةٌ | تَضَلِيلٌ |
|------------|------------|------------|-----------|

| | | | |
|--------|-----------|-----------|-------------|
| صَدْقٌ | تَقْوِيمٍ | تَكْذِيبٍ | مَرْفُوعَةٌ |
|--------|-----------|-----------|-------------|

| | | | | |
|-----------|-----------|---------|---------|---------|
| مَشْهُودٌ | مَجْنُونٌ | قَدْحًا | صُبْحًا | نَقْعًا |
|-----------|-----------|---------|---------|---------|

| | | | | |
|-----------|------------|------------|------------|------------|
| الْبَابَا | أَشْتَانَا | أَعْنَابَا | أَنْزَابَا | أَنْوَاجَا |
|-----------|------------|------------|------------|------------|

سيق ١٨ Lesson 18

| | | | | |
|-------|-------|--------|---------|---------|
| عَلَى | إِلَى | أُوْيٰ | فَهَذِي | أَغْنِي |
|-------|-------|--------|---------|---------|

| | | | |
|----------|---------|----------------|-----------------|
| يَحِيٰيٰ | تَرْضِي | مِائَةٌ وَانَا | مِنَ الْأَوْلَى |
|----------|---------|----------------|-----------------|

| | | | |
|--------|-----------|-------------|------------------|
| رَضُوا | أَمْسَنَا | بِالْغَيْبِ | مَا الْقَارِعَةُ |
|--------|-----------|-------------|------------------|

NOTE : IN LESSON 18 EXPLAIN THE LETTERS THAT SHOULD NOT BE READ/ PRONOUNCED.

| | | | | |
|-------------|-------------|--------------|-------------|----------|
| أُولَئِكَ | هُوَ لَا | فَانْصَبْ | وَانْحَدَرْ | أَنَّ |
| بَشَرٌ | طَوْيٌ | هُدًى | صَلْوَةٌ | زَكُوْةٌ |
| مُؤْسَدَةٌ | شَاءْنٌ | يَا مَرْكُمْ | يُؤْمِنْ | |
| تَؤْشِرُونَ | ثَأْكُلُونَ | يُؤْتَوْنَ | | |

سُبْقِي ۱۹ Lesson 19

| | | | | |
|--------------|---------------|--------------|-------------|----------|
| يَا أَنْتُمْ | وَامْرُتُنَّا | تَأْتِيْهِمْ | مَا وَاهِمْ | كَاسَّا |
| يَابْ | نَاتْ | قَرَاثَ | بَاسْ | مَاكُولْ |

فَخُذْ ذُهَةٍ وَمَا أَنْهِكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوا

وَادْعُ قَالَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ اسْرَارَ

NOTE : EXPLAIN HOW THE HAMZA WITH A JAZAM ON TOP SHOULD BE READ.
THE ALIF WHICH HAS A JAZAM ON TOP IS KNOWN AS A HAMZA AND SHOULD
BE READ WITH A SLIGHT TWITCH.

سُبْقٌ ٢٠ Lesson 20

| | |
|--|---------------------------|
| رَبٌّ بَ = رَبَّ | إِنَّ شَمْمَةً = شَمْمَةً |
| عَمَّ شَمَّ مَنَ مَدَ قَلَ حَجَّ آنَّ | |
| تَبَ ظَنَ صَبَ مَمَّ أَيِّ شَرِّ صَلِّ | |
| حُبَا جَمَا دَكَا شَقَّا صَفَا حَقَّ حَلِّ | |
| كُلُّ رَبُّ غَمَّ عَلَّ ظَلِّ صَدِّ | أُمُّ |

سُبْقٌ ٢١ Lesson 21

| | |
|--|-----------------------|
| أَلَا بَلَّا كَلَا إِلَّا | مَنَا إِيَّاكَ إِنَّا |
| أَنِّي حَتَّى عَنِي مِنِّي إِنِّي رَبِّي أَتَيْ | |
| لَشَقَّى صَلَى جَلَهَا زَكَهَا أَنَا سَيِّ | |
| اللهُ رَبَّنَا فَلَمَّا إِنَّمَا أَيْهَا يَقَدِّرُ | |

مشق Exercise

| | | | | |
|--|-------------|---------------|-------------------|---------------|
| صَدَقَ | قَدَرَ | كَذَبَ | وَدَعَكَ عَلَمَ | |
| حُصِّلَ | مِلَةٌ | شُوبَ | تَبَّتْ هَمَّتْ | |
| اِنَّمَا | كُنَّا | اِنَّهَا | لَعَلَّ فِيْهِنَّ | |
| تَقَبَّلَ كَذَبَتْ زُوْجَتْ عَطِّلَتْ | | | | |
| يَمْدُودَ | يَدْعُ | يَظْنُونَ | يَحْضُونَ | يَفِرُونَ |
| يَكْذِبُ | تُحَدِّثُ | بِيْسِيرُ | نُقَدِّسُ | |
| يَخْتَصُ مِنْفَكِينَ مُتَقِّيَّينَ | | | | |
| يَخْتَصُ | مِنْفَكِينَ | مُتَقِّيَّينَ | مَنْفَكِينَ | مُتَقِّيَّينَ |
| مَنْفَكِينَ | مَدَّتْ | خَفَّتْ | مَدَّتْ حَقَّتْ | |
| تَخَلَّتْ | وَالنَّاسُ | خَنَّاسَ | جَنَّةٌ قَوَّةٌ | |

كَرَّةٌ

قِيمَةٌ

عَشِيشَةٌ

عَلِيْنَ

سُبْقٌ ۲۲ Lesson 22



| | | | | | | | |
|---------------|---------------|---------------|---------------|---------------|---------------|---------------|---------------|
| بَا | بُوْ | بَأْ | بُوْ | بِيْ | بَأْ | بُوْ | بِيْ |
| سَا سُوْ سِيْ |
| بَاءَ | جَاءَ | سَاءَ | شَاءَ | مَاءَهَا | سَوْءَةً | جَاءَ | سَاءَ |
| عَطَاءٌ | غُثَاءٌ | إِنْسَاءٌ | أَدَاءٌ | سَوَاءٌ | جَزَاءٌ | عَطَاءٌ | غُثَاءٌ |
| بَلَاءُ | دِمَاءُكُمْ | حُنْفَاءُ | وَرَاءَةُ | أَوْلَيَاءُ | بَلَاءُ | دِمَاءُكُمْ | حُنْفَاءُ |
| بِيْعَةٌ | بِرْيَاءُ | بُضَيْعَةٌ | بَرِيْأَةٌ | خَطِيْبَةٌ | بِيْعَةٌ | بِرْيَاءُ | بُضَيْعَةٌ |

NOTE : WITH EXAMPLES EXPLAIN HOW THE LETTER WITH & WITHOUT A MADD SHOULD BE READ - THE LETTERS WITH A MADD ARE STRETCHED LONGER.

| | | |
|------------|-----------------|--------------------------|
| مَلَكُكُهُ | يَا دُمْ كَبَرَ | لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ |
|------------|-----------------|--------------------------|

| | | | | |
|----------|--------|--------|--------|-------------|
| جَاءُوكَ | الَّهُ | بَأْنُ | آلُونَ | بَأْءُوْدَا |
|----------|--------|--------|--------|-------------|

سبق ۲۳ Lesson 23

| | | | | |
|--------|---------|---------|----------|----------|
| ضَالًا | حَاجَكَ | دَآبَةٌ | سَادُوكَ | خَاصَّةً |
|--------|---------|---------|----------|----------|

| | | | |
|---------|-------------|-----------|-------|
| كَافَةً | بِضَارِهِمُ | تَحْضُونَ | جَانٌ |
|---------|-------------|-----------|-------|

| | | | |
|--------|-----------|------------|-------|
| آمِينَ | ظَابِيْنَ | ضَالِّيْنَ | اللهُ |
|--------|-----------|------------|-------|

سبق ۲۴ Lesson 24

| | | | | | |
|-------|--------|--------|---------|-------|--------|
| عَمَّ | عَمَّا | فِيْمَ | فِيْمَا | مِمَّ | مِمَّا |
|-------|--------|--------|---------|-------|--------|

| | | | | | |
|-------|--------|-------|--------|-------|--------|
| كَانَ | كَانَا | إِنَّ | إِنَّا | ظَنَّ | ظَنَّا |
|-------|--------|-------|--------|-------|--------|

NOTE : IT SHOULD BE EMPHASISED THAT THE ALIF AT THE END OF THE WORD SHOULD BE CLEARLY PRONOUNCED.

تَابَا قَالا مُكْلَأ لِيَكُونَ فَقُولَأ سَسُولَا

إِذْهَبَا بِشَتْمَأ فَلَأْتَقْرَبَا أَطَاعُونَ

سِيقٌ ٢٥ Lesson 25

رَسُولٌ مِّنَ اللَّهِ كِتَابٌ مُّبِينٌ خَيْرٌ مِّنْهُ

رَجَاجَارَةٌ مِّنْ سِجِّيلٍ لَوْحٌ مَحْفُوظٌ

صُحْفًا مُّطَهَّرَةً دَقْلُواهُمْ قَوْلَا

مَعْرُوفًا مَتَاعًا لَكُمْ خَيْرٌ لِأَنفُسِهِمْ

جَنْتٌ لَهُمْ ذَبَدًا سَلَبِيَا غَفُورٌ رَّحِيمٌ

عِيشَةٌ سَاضِيَةٌ



لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ

سُقِيقٌ ۲۶ Lesson 26

مِنْ مَّا إِرْجَعَ رَبُّهُ مِنْ مِثْلِهِ وَإِنْ مَنْ شَيْءٌ
مِنْ لَدُنْهُ لَمْ يَكُنْ لَّهُ أَنْ لَمْ يَرَهُ
مِنْ رَبِّكَ مَنْ رَحِمَ أَنْ سَاءَ قُلْ
رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا بَلْ رَفَعَ غَابِدًا
مَا عَبَدْتُمْ وَجَدْتُمْ وَعَدْتُهُمْ
وَإِنْ عَدْتُمْ كِدْتَ وَارْكَبْتُ مَعَنِّي

سُقِيقٌ ۲۷ Lesson 27

حَبَّاً وَنَبَاتًا وَلِيَّا وَلَا نَصِيرًا إِيمَانًا
وَقَالُوا إِلَهُ وَاحِدٌ مَالٌ وَلَا بَنُونَ

يَوْمَئِذٍ وَّاجْفَةً^١ أَفَمَنْ وَعَدْنَا شَرَّاً يَرَةً

خَيْرًا يَرَةً^٢ وَيُلْ يَوْمَئِذٍ يَصُدُّرُ^٣

النَّاسُ دَافِقٌ يَخْرُجُ^٤ فَمَنْ أَنْ يَشَاءُ^٥

يَعْمَلُ إِنْ يَنْصُرُ كُمْ^٦ وَإِنْ يُرِيدُوا^٧

سبق ٢٨ Lesson 28

مِنْ بَعْدِ^٨ إِلَيْهِ لَيْتَبَذَّنَ^٩ ذَنْبٌ

أَنْتُبَيَّأَ^{١٠} مَنْ بَخَلَ^{١١} مِنْ بَيْنِ^{١٢} أَنْتَبَتُنَا

لَنْسُفَعًا^{١٣} إِلَى التَّاصِيَةِ^{١٤} خَبِيرُ^{١٥} مَا تَعْمَلُونَ

أَبَدًا^{١٦} إِيمَانًا^{١٧} عَلِيِّمٌ^{١٨} لَهُ سَوَاعِدَ^{١٩} بَيْنَنَا

سیق ۲۹ Lesson 29

قَدْ يُرِيَ إِلَّذِيْ
لَمَذَّةٌ إِلَّذِيْ نُوْحٌ ابْنَهُ

| | |
|--------------------------|----------------------|
| شَيْئًا إِنَّ تَخَذَّهَا | خَيْرًا الْوَصِيَّةُ |
|--------------------------|----------------------|

أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ مِنْ خَوْفٍ وَجَنَّتٍ

الْفَاغَأَ إِذَا حَسَدَ لِمَا يُرِيدُ بِا صَاحِبٍ

الْفِيلِ أَرْبُي لَهُبٍ وَتَبَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُ

لِتَعْجَلَ بِهِ إِنَّهُ كَانَ تَوَابًا وَشَاهِدًا

مَشْهُودٌ مِنْهُمْ تُقْتَةً ذُرْيَةً طَيْبَةً

NOTE : IT SHOULD BE EXPLAINED TO THE CHILDREN THE WAY IN WHICH ONE SHOULD STOP AT THE END OF THE WORD & THE SOUNDING OF THE LAST LETTER.

أَصْحَابُ الْقَرْيَةِ مَا سَمِعَ سَمِوتٌ
مَا الْعَقَبَةُ

فَاسْتَقْبِلُوا الْخَيْرَاتِ وَيُرْبِّي الصَّدَقَاتِ

بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طَوَّى يَتَّبَعُهَا أَذْيَ

وَنِسَاءٌ لَيْسُوا سَوَاءً أَخَاهُمْ صَالِحَام

نَارٌ حَامِيَةٌ كُتُبٌ قِيمَةٌ إِلَّا هُوَ

أَعْمَالُهُمْ أُدْخِلُهَا مَنْ دَشَهَا

إِذْ صَلَى لَشَّتِي جَنَّتِي إِذَا يُسْرِرُ

وَلَوْا صُوَرَ الصَّبِيرِ حَتَّى مَطْلَعِ الْفَجْرِ

أَبَا بَيْلَ تَرْمِيهِمْ - أَفْوَاجًا فَسَيِّخَ

وَالْفَجْرُ وَلَيَالٍ - يَوْمَئِذٍ وَأَجْفَهُ

أَبْصَارُهَا خَارِشَةٌ كَيْدًا وَأَكْيَدُ—

فِي الْعَقْدِ وَالثِّينِ مَا لَطَارْقُ

النَّجْمُ الشَّاقِبُ أَمْرٌ لَا سَلْمٌ

وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ

وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

تَهْمِيدُ

الْمَمْعَصَ الْمَرَّ كَهْيَعَصَ

طَهَ طَسَمَ طَسَ يَسَ صَ حَمَ



ن

ق

عَسَقَ

حَمَ



NOTE : IT IS A VIRTUE TO MEMORISE THE HUROOF-E-MU-QAT-TA-AAT,

شش کلمہ SIX KALIMAH

FIRST KALIMAH TAYYIBAH

(CODE OF UNITY)

پہلا کلمہ طیب

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ

Laa Ilaaaha IllAllahu Muhammadur Rasulullaah

There is none worthy of worship besides Allah;

Muhammad ﷺ is the messenger of Allah.

SECOND KALIMAH SHAHAADAT

(CODE OF TESTIMONY)

دوسرا کلمہ شہادت

أَشْهَدُ أَنَّ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ
وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

Ashhadu allaa ilaaha illal laahu wahdahu laa
shareekalahu wa ashhadu anna Muhammada
abduhu wa rasuluhu

I bear witness that there is none worthy of worship besides
Allah. He is alone. He has no partner, and I bear witness
that Muhammad ﷺ is His servant and messenger.

THIRD KALIMAH TAMJEEED

(CODE OF UNITY OF GLORIFICATION
OF ALLAH)

تیسرا کلمہ تمجید

سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ
وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

Subhaanal laahi wal hamdu lillaahi wa laa ilaaha illal
laahu wAllahu akbar wa laa hawla walaa Quwwata
illaaa billaa hil Aliyyil Azeem

Glory be to Allah, and all praise be to Allah. There is none
worthy of worship besides Allah and Allah is the Greatest.

There is no power and might except from Allah,
The Most High, The Great.

FOURTH KALIMAH TAUHEED

(CODE OF UNITY OF ONENESS
OF ALLAH)

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ
يُنْهَىٰ وَيُمْدَدُ وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمْتُ أَبَدًا أَبَدًا ذُو الْجَلَالِ
وَالْأَكْرَامِ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

Laa ilaaha illAllahu wahdahu laa shareekalahu
lahul mulku wa lahul hamdu yuhzee wa yumeetu
wa huwa hayyun, la yamuto abadan abada.

Zuljalaale wal Ikraame bi yadihil khair
wa huwa 'ala kalli shayien qadeer

There is none worthy of worship besides Allah who is alone. He has no partner. For Him is the Kingdom, and for Him is all praise. He gives life and causes death. He is Everlasting, He will never die, He is Majestic and Benevolent. In His hand is all good. And He has power over everything.

FIFTH KALIMAH ASTAGHFAR

پنجم کلمہ استغفار

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ أَذْنَبْتُهُ عَمَدًا أَوْ خَطَا سِرًا
أَوْ عَلَانِيَةً وَأَتُوبُ إِلَيْهِ مِنَ الذَّنْبِ الَّذِي أَعْلَمُ وَمِنَ الذَّنْبِ الَّذِي
لَا أَعْلَمُ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَمُ الْغَيْوَبِ وَسَتَارُ الْعَيْوَبِ وَغَافِرُ
الذَّنْبِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

Astaghfirullaaha rabbi min kulli zanbin aznabtuhu 'amadan aw khata an sirran aw 'alaaniyyatan wa atoobu ilaihe minaz zanbil lazi a'alamu wa minaz zambil lazi la a'alam innaka anta allaamul gyoobi wa sattaarul 'uyoobi wa ghaffaruz zunoobi wa laa hawla walaa Quwwata illaa billaahil 'Aliyil Azeem

I seek forgiveness from Allah, my Lord, for every sin I have committed deliberately or in error, secretly or in public. And I repent before Him for the sin I know of and for the sin I do not know of. Indeed! You are the Knower of the thing unseen, and the Councillor of shortcomings and the Forgiver of sins, And there is no power and might except from Allah, the Most High, the Great.

SIXTH KALIMAH RADDE KUFR

(CODE OF NULLIFICATION OF
DISBELIEF)

ششم كلمة رد الكفر

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ أُشْرِكَ بِكَ شَيْئًا
وَأَنَا أَعْلَمُ بِهِ وَأَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا أَعْلَمُ بِهِ تَبَرُّتُ عَنْهُ
تَبَرُّتُ مِنَ الْكُفَّارِ وَالشَّرِكِ وَالْكُنْدِ وَالْغَيْبِ وَالْبَدْرِ
عَنْهُ وَالنَّمِيمَةِ وَالْفَوَاحِشِ وَالْبُهْتَانِ وَالْمَعَاصِي كُلُّهَا
وَأَسْلَمْتُ وَأَقُولُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدُ رَسُولُ اللَّهِ

Allah humma innee a'oozu bika min an ushrika bika shay'awn wa ana a'alamu bihi wa astaghfiruka limaa laa a'alamu bihi tubtu 'anhu wa tabarratu minal kufri wash shirki wal kizbi wal ghibate wal bimate wal namimate wal fawahishe wal buhtaane wal ma'aasi kullihaa wa aslamtu wa aqulu laa Ilaha illal laahu Muhammadur Rasulullah O Allah, Surely I do seek refuge in You from knowingly associating any partner with You knowingly; I beg Your forgiveness for the sin from which I am not aware of; I repent it and I declare myself free of infidelity, polytheism (associating any partner with Allah) telling lies and all other sins. I accept Islaam and believe and declare that there is none worthy of worship besides Allah and Muhammad ﷺ is the messenger of Allah.

صفت ايمان مفصل

IMAANE MUFASSAL

(ARTICLES FAITH)

أَمَدْنَتْ بِاللَّهِ وَمَلَكِتْهُ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْقَدْرِ
خَيْرٌ وَشَرٌّ مِنَ اللَّهِ تَعَالَى وَالْبَعْثَ بَعْدَ الْمَوْتِ ۝

Aamantu billaahi wa malaa'ikatihi wa kutubihi
wa rusulihi wal yawmil aakhiri wal qadri khairihi
wa sharrihi minal laahi ta, aala wal ba'athi
b'adal mawt.

I believe in Allah and in His Angels and in His books
and in His Messengers and in the last day and in fate
that everything, good or bad is decided by Allah,
the Almighty and in the life after death.

صفت ايمان مجمل

IMAANE MUJMAL

(FAITH CONCISE FORM)

أَمَدْنَتْ بِاللَّهِ كَمَا هُوَ بِإِسْمَائِيهِ وَصِفَاتِهِ وَقَبْلَتْ بِجَمِيعِ الْحَكَامَةِ إِقْرَارًا
وَالْلِسَانِ وَتَصْدِيقَ بِالْقُلُوبِ ۝

Aamantu billaahi kamaa huwa bi asmaa'ihi wa
sifaatihi wa qabiltu jamee'a ahkaamihi. Iqrarun
bil-lisani wa tasdiqum bilqalbi.

I believe in Allah (as He is) with all His names and
Attributes and I accept all His commands. I accept
verbally and endorse this truth from core of my heart.

TASBIHAT-I-SALAAT

THANA

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ
وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ

Subhanak allahumma wa bihamdika
wa tabarakasmuka wa ta'ala jadduka wa lailaha
ghairuka

All Glory be to you O Allah! and praise be to you;
Blessed is Your name and Exalted is Your Majesty,
and there is none worthy of worship besides You.

RUKU

سُبْحَانَ رَبِّيِ الْعَظِيمِ

Subhana rabbiyal azime
How Glorious is my Lord the Great!

رُكُونٌ

تَسْمِيَةٌ

TASMEE

سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ

Sami-allahu liman hamidah
Allah has listened to him who has praised Him.

TAHMEED

رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ

Rab-ba-naa la-kal hamd.
O Our Lord! Praise be to You.

تَحْمِيدٌ

SAJDAH

سُبْحَانَ رَبِّيِ الْعَالِيِّ

Subhana ribbiyal a'ala

All Glory be to my Lord, the Highest of all.

سُجْدَةٌ

تَشْهِيد

TASHAHHUD

التحياتُ لِلّٰهِ وَالصَّلٰوٰتُ وَالظَّيْبٌ السَّلٰامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا السُّلٰيْفِ
وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلٰامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ
الصَّالِحِينَ أَسْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلّٰ اللّٰهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

At-tahiyatu lillahi was-salawatu wat-taiyibatu
as salamu 'alaika aiyohan-nabio wa rahmatul-lahi
wa barakatuhu as-salamu alina wa'ala ibadillahis-
salihin, ashhadual-lailaha illallahu wa ashhadu
anna muhammadan abduhu warasuluhi.

All reverence, all worship, all sanctity are due to Allah
Peace be upon you O Prophet! And the Mercy of Allah
and His Blessings. Peace be upon us and all the
righteous servants of Allah. I bear witness that none is
worthy of worship besides Allah and Muhammad ﷺ
is His devotee and Messenger.

DUROOD SHAREEF

درود شریف

اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى أَلٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ
عَلٰى إِبْرَاهِيمَ وَعَلٰى أَلٰلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ فَقِيْدٌ

Allahumma Salli'ala Muhamadin wa'ala aali
Muhamadin kama sllaita'ala ibrahima wa'ala
aali ibrahima innaka hamidum majid.

O Allah! Shower Your mercy upon Muhammad ﷺ and
the followers of Muhammad ﷺ as You showered Your
mercy upon Ibraheem ﷺ and the followers of
Ibraheem ﷺ Verily, You are praiseworthy, glorious.

اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى أَلِي مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ
عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى أَلِي إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَحْمِيدٌ

Allahumma barik 'ala muhammadin wa ala aali muhammadin. kama barakta ala ibrahima wa'ala aali ibrahima innaka hamidum majid.

O Allah! Shower Your mercy upon Muhammad ﷺ and the followers of Muhammad ﷺ as You showered Your mercy upon Ibraheem ﷺ and the followers of Ibraheem ﷺ Verily, You are praiseworthy, glorious.

درود شریف کے بعد کی دعا THE DU'A AFTER DUROOD

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي مُبَرَّأً وَ
تَقْبِلُ دُعَاءِ رَبَّنَا أَغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ
يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ

Rabbij-Alni muqimas-salate wa min zurriyati,
Rabbana wa taqabbal dua. Rabbanagh firli Wa liwalidayya wa lil mu'mineena yauma yaqoomul hisab.

Our Lord! Make me and my children steadfast in prayer;
Our Lord! Accept the prayer. Our Lord! Forgive me. And
my parents and believers on the day of judgement.

SALAAM

سلام

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ

As salamo alaikum wa rahmatullah
Peace be upon you and the Mercy of Allah

اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ
 عَلَيْكَ وَنُشْفِنُ عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا
 نَكْفُرُكَ وَنَخْلُمُ وَنَذْرُكَ مَنْ يَفْجُرُكَ اللَّهُمَّ
 إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّي وَنُسَجُّدُ وَإِلَيْكَ لَسْعَةٌ
 وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوا رَحْمَتَكَ وَنَخْشِي عَذَابَكَ إِنَّ
 عَذَابَكَ يَا لِكُفَّارًا مُلْحِقٌ

Allahumma inna nasta'inuka wanastaghfiruka
 wanuminu bika wanata wakkalu alaika wa nusni
 alaikalkhairu wa nashkuruka wala nakfuruka wa
 nakhluu wa natruku main-yafjuruka allahumma
 iyyaka na'budu walaka nusalli wa-nasjudu
 wa-ilaika nas'a wa-nahfidu wa narju rahmataka
 wa nakhsha 'azabaka inna 'azabaka
 bil-kuffari mulhiq.

(O Allah! We beseech Your help and we ask Your pardon
 and we believe in You, and we put our trust in You and
 we praise You in the best manner and we thank You and
 we are not ungrateful to You and we cast off and leave
 one who disobeys You. O Allah! You alone we serve and
 to You do we pray and we prostrate and to You do we
 flee and we are quick and we hope for Your mercy and
 we fear Your punishment. No doubt Your punishment
 overtakes the unbelievers.

OF MAKING WUDHU

face and feet, etc. before Z is called WUDHU or z is accepted without Wudhu.

h, and clean place to perform on of the Holy KA'BA Sharif

COMMENCING WUDHU

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

water **first** wash **both** the **three** times.



ing the teeth and then **gargle**

Tiswaak during **Wudhu**



upto the **nostrils three** and clean the nose



DUA-E-QUNO

وَعَمِّنْ بِكَ وَنَتَوْكِلْ
وَنَشْرُكْ وَلَا
مَنْ يَنْجُوكَ اللَّهُمَّ
وَسَجَدْ وَإِذْنِكَ لَسْعَ
وَنَخْنَ عَذَابَكَ إِنَّ
كَ مُحْكِمٌ

Allahumma inna na-
wanuminu bika wa-na-
alaikalkhairu wa-na-
nakhlau wa natruka-
iyyaka na'budu wa-
wa-ilaika nas'a wa-na-
wa nakhsha bil-kufar

(O Allah! We beseech You and we believe in You, and we praise You in the best; we are not ungrateful to You, one who disobeys You. O to You do we pray and flee and we are quick and we fear Your punishment which overtakes those

THE PROCEDURE OF MAKING WUDHU

1. To wash one's hands, face and feet, etc. before performing NAMAAZ is called WUDHU or ABLUTION. No Namaaz is accepted without Wudhu.
2. One should sit on a high, and clean place to perform Wudhu. Face the direction of the Holy KA'BA Sharif if possible.

DUAА BEFORE COMMENCING WUDHU

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

3. Using **Tahir** (clean) water **first** wash **both** the **hands** upto the **wrists three** times.



4. Use a **Miswaak** for cleaning the teeth and then **gargle** the mouth **three** times.

* It is **Sunnat** to make **Miswaak** during **Wudhu**



5. Thereafter take water upto the **nostrils three** times with the **right** hand and clean the nose with the **left** hand.



6. Then wash your *face three* times. Wash from the hairy part of the forehead to below the chin and from one ear lobe to the other.



7. Then make *Khilal* of the *beard*.
8. Thereafter wash the *right hand including the elbows three* times.



9. Then wash the *left hand including the elbows* thrice.



10. Then make *Khilal* of the *Fingers*.



11. Thereafter with the hands and pass them over the head, ears and nape. This must be done once only. It is known as *Masah*.

MASAH [wet the hands & fingers] * keep **three** fingers of each hand together (middle finger, ring finger and little finger). * keep thumb and index finger raised (away). *keep thumb, index finger and palm away from the head. Pass the three fingers from the forehead to the upper portion of the nape. * Then place the palm on the sides of the head and bring forward to forehead



- * Then insert the front portion of the index finger into the openings of the ear.
- * Then make Masah behind the ears with the inner part of the thumb.
- * Make Masah of the nape with the back of the middle finger, ring finger and little finger.

12. Then wash **both** the *feet including* the *ankles three* times. First the **right** and then the **left** foot.

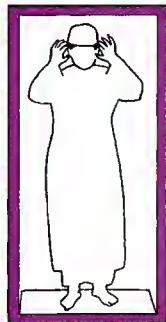


- * First wash the **right foot** then make **khilal** including the ankle and of the **toes**.
- * Then wash the **left foot** then make **khilal** including the ankle and of the **toes**.

PERFORM SALAH CORRECTLY

When you begin the Salah:

1. Make *Niyah* or intention in your heart to the effect that you are offering such and such *Salah*. It is not necessary to say the words or the *Niyah* verbally.
2. Raise your hands up to your ears in a way that palms face *Qiblah* and the ends of the thumbs either touch the lobes of the ears or come parallel to them. The rest of the fingers stay straight pointing upwards. There are some who would tend to turn the direction of their palms towards their ears rather than having them face the *Qiblah*.



There are some others who almost cover their ears with their hands. There are still others who would make a faint symbolic gesture without raising their hands fully upto the ears. Some others grip the lobes of their ears with their hands. All these practices are incorrect and contrary to Sunnah. These should be abandoned.

3. While raising your hands in the manner stated above, say: ﴿الله اکبر﴾ *Allah-akbar*. Then using the thumb and the little finger of your right hand, make a circle round the wrist of your left hand and hold it. You should then spread out the three remaining finger of your Right hand on the neck of your left hand so that these fingers face the elbow.
4. Placing both hands slightly below the navel, fold them as explained above.

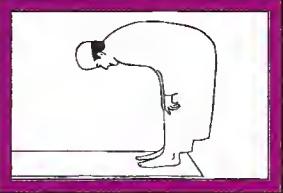


When you are standing:

1. If you are making your *Salaat* alone, or leading it as Imam you first recite *thana'*: سُبْحَنَكَ اللَّهُمَّ then *Surah al-Fatiha*, then some other *Surah*. If you are behind an Imam, you only recite *Thana*: سُبْحَنَكَ اللَّهُمَّ and then stand silent listening attentively to the recitation of the Imam. If the Imam's recitation is not loud enough for you to hear, you should be thinking of *Surah al-Fatiyah* using your heart and mind without moving your tongue.
2. When you are reciting yourself, it is better that you, while reciting *Surah al-Fatiyah*, stop at every verse and break your breath. Recite the next verse in a single breath. For example, break your breath at الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ then on الْعَمَدِ يَتَوَهَّمُ الطَّلَيْنِ then on مَلَكُ يَوْمِ الْقِيَامَةِ Recite the whole *Surah al-Fatiyah* in this manner. But, there is no harm if, during recitation that follows, more than one verse has been recited in a single breath.
3. Do not move any part of your body without the need. In peace the more, the better. If you have to scratch or do something else like that, use only one hand and that too, under very serious compulsion using the least time and effort.
4. Transferring the weight of the body on to one leg and leaving the other weightlessly loose to the limit that it shows a certain bend is against the etiquette of *Salaat*. Abstain from it. Either you transfer your body weight equally on both legs or if you must channel your body weight on one leg, you have to do it in a way that the other leg shows no bend or curve.
5. If you feel like yawning, try your best to stop it.
6. When standing for *Salaat*, Keep your eyes looking at the spot where you make your *Sajdah*. Abstain from looking to your right and left, or front.

When in Ruku:

When you bend for **Ruku'** watch out for the following.

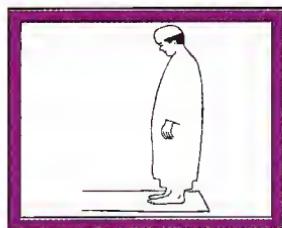
1. Bend the upper part of your body up to point where the neck and back nearly level up. Do not bend any more less than that.
2. While in **Ruku'** do not bend the neck to the limit that the chin starts touching the chest, nor raise it so high that the neck goes higher than the waist level. Instead, the neck and the waist should be in onelevel.
3. In **Ruku**; keep feet straight. Do not place them with an outward or inward slant.
4. Place both hands on your knees in a way that fingers of both hands stay open. In other words, there should be space between every two fingers when you thus go on to hold the right knee with your right hand and left knee with your left hand.
5. In the state of **Ruku**, wrists and arms should remain stretched straight. They should not bend, curve or sag.
6. Stay in **Ruku'** at least for a time during which سُبْحَانَ رَبِّ الْعَالَمِينَ could be said three times calmly and comfortably.
7. Stay in **Ruku'** the eyes should be looking towards the feet.
8. Body weight should be evenly distributed on both feet and both knees should be parallel to each other.

Returning to the standing position from Ruku:

1. While returning from **Ruku**, back to the standing position, see that you stand straight leaving no sag or droop in the body.

2. In this position as well, eyes should be fixed on the spot where you do your **Sajdah**.

3. There are those who simply make a 'gesture' of rising from the **Ruku**' instead of rising fully and standing upright when it is time to do so and who, in that very state, when their body is



still bent down Wards, go on their **Sajdah** for them it becomes obligatory that they make their **Salaat** all over again. Therefore, abstain from it very firmly. Unless you make sure about position, do not go for **Sajdah..**

When bowing down for Sajdah:

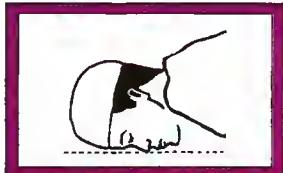
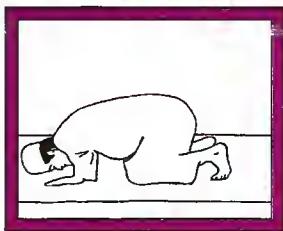
Remember the following method when bowing down for **Sajdah**:

1. Bending the knees first of all, take them towards the prayer floor in a way that the chest does not lean forward. When the knees have already been rested on the floor, the chest should then be lowered down.
2. Until such time that the knees have come to rest against the floor, abstain, as far as possible, from bending or lowering the upper part of the body.

These days negligence in observing this particular rule of etiquette while getting ready to go for **Sajdah** has become very common. Many people would lower down their chest right from the start and go on to do their **Sajdah**. But, the correct method is what has been stated in #1 and #2 above. Unless it be for a valid reason, this method should not be by passed.

3. After having rested your knees on the floor, place your hands first, then the tip of the nose, then the forehead.

In Sajdah:

1. While in **Sajdah**, keep your head in between your two hands in a way the ends of the two thumbs come parallel to the ear-lobes.
2. In **Sajdah**, fingers on both hands should remain close together, that is, the fingers should adjacent to each other leaving no space in between them.
3. The direction of the fingers should be towards the **Qiblah**.
4. The elbows should stay raised off the floor. It is not correct to rest the elbows on the floor.
5. Both arms should stay apart from armpits and sides. Never keep them tucked in.
6. Do not, at the same time, poke your elbows far out to your right and left causing discomfort to those making **Salah** next to you.
7. The thighs should not come in contact with the stomach wall. The stomach and the thighs should stay apart.
8. During the entire **Sajdah**, the nose-tip should continue to rest on the floor.
9. Both feet should be placed upright on the floor with heels showing on top and all fingers turned flat on the floor in the direction of the **Qiblah**. Those who cannot turn all their fingers because of the physical formation of their feet, they will still do well to turn them as much as they can. It is not correct to place the fingers vertically on the floor just for no valid reason.

- Be careful that your feet do not lift off the floor during **Sajdah**. Some people would do their **Sajdah** while none of the fingers on their feet come to rest on the floor even for a moment. This way the obligation on **Sajdah** is not liquidated at all, and as a result, the **Salaat** too becomes invalid. Be very particular in abstaining from this error.
- In the stage of **Sajdah**, the least time you can give yourself should be sufficient enough to say **سُبْحَانَ رَبِّنَا لَعْلَى** three times, calmly and comfortably. Raising the forehead immediately after having rested it on the floor is prohibited.

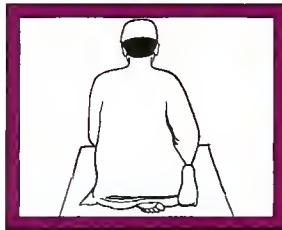
In between the two Sajdahs:

- Rising from the first **Sajdah**, sit up straight, on the hams, calmly and comfortably. Then go for the second **Sajdah**.

Doing the second **Sajdah** after raising the head just a little bit and without becoming straight is a sin. If one does it like that, it becomes obligatory that the **Salaat** be made all over again.



- Spread out the left foot (like the blade of a hockey stick) and sit on it. Let the right foot stand vertically with fingers turned towards the **Qiblah**. Some people let both feet remain in up right position and sit on the heels. This method is not correct.

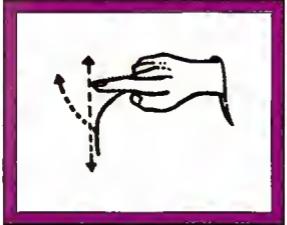


3. While sitting, both hands should be placed on the thighs but fingers should not taper down onto the knees, instead, the far ends of the finger tips should reach only as far as the beginning edge of the knee.
4. While sitting, let your eyes be on the lap.
5. Sit for a time during which بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ could be said at least once and if you can sit for a time during which اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَاهْدِنِي وَعَافِنِي وَارْزُقْنِي could be recited, it is better. But, reciting this during *Fard* (obligatory) salah is not necessary. It is better to do so in Nafl Salah.

The second Sajdah and rising from it :

1. Go on to do your second *Sajdah* in the same manner by first placing both hands on the floor, then the nose-tip, then the forehead .
2. The complete form of *Sajdah* should be the same as mentioned in connection with the first *Sajdah*.
3. When rising from *Sajdah*, first raise the forehead off the floor, then the nose-tip, then the hands, and then the knees.
4. While rising, it is better not to lean for support off the floor, however, should it be difficult to get up from the floor because of body-weight, sickness of old age, making use of the floor for support is also permissible.
5. After you have risen back to your standing position, recite بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ before *Surah al-Fatihah* in the beginning of each *rak'ah*.

In Qa'dah :

1. The method of sitting in *Qa'dah* shall be the same as mentioned in connection with the method of sitting between *Sajdahs*.
2. When you reach أَشْهُدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ أَكْبَرُ while reciting raise the *Shahadah* finger (the fore -finger or the index finger) with a pointing motion and let it fall back.
3. The method of making a pointing motion is that you make a circle by joining your middle finger and the thumb, close the little finger and the ring-finger (the one next to it), then raise the *shahadah* finger in a way that it is tapered towards in the *Qiblah*. It should not be raised up straight in the direction of the sky.
4. However, lower the *Shahadah* finger while saying لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ أَكْبَرُ but retain, right through the end, the initial formation of the rest of the fingers you already had when making the pointing motion.

When turning for Salam :

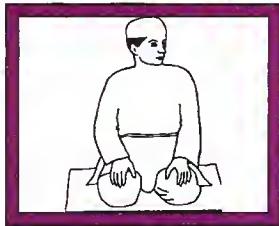
1. When turning for *Salam* on both sides, you should turn your neck just enough that your cheeks become visible to the person sitting behind you.
2. When turning for *Salam*, eyes should be towards the shoulders.

3. When turning your neck to the right to say ﷺ make an intention that you are offering your **Salam** greetings to all human beings and angels on your right. Similarly, while turning for **Salam** to the left, have the intention of offering your **Salam** greetings to all human beings and angels present on your left.

First Right



Then Left



The method of Du'a:

1. The method of **Du'a** is that both hands be raised high enough so that they come in front of the chest. Let there be some space between the two hands. Do not bring the hands close together nor keep them far apart.
2. When making **Du'a**, keep the inner side of the hands turned towards your face.



ب ت س ج ح خ



Millat Book Centre

A-34, Mount Kailash,
New Delhi - 110065 (INDIA)